मूल्य 1 रूपया

कृषक समाचार

भारत कृषक समाज का मासिक मुख पत्र

कृषक समाचार की 32,000 प्रतियां सन् 1960 से हर महीने छापकर सदस्यों को भेजी जाती हैं

वर्ष 63 | नवंबर, 2018 | अंक 11 | कुल पृष्ठ 8

सभापति का पत्र :

किसानों की सहायता करने की जब बात आती है तो जो व्यक्ति खेती नहीं करता है, वह सोचता है कि किसानों की पहले ही बहुत ज्यादा सहायता की जा रही है और अब किसानों की सहायता करने के लिऐ फालतू धन नहीं है।

किंतु, जब सातवें वेतन आयोग में कर्मचारियों का वेतन बढाने की बात आती है तो उनके बारे में ऐसी बातें नहीं की जाती। लेकिन इसके विपरीत कई अर्थशास्त्री कहते हैं कि देश की उन्नती के लिऐ सिस्टम में पैसा फैंकना जरूरी है। इस प्रकार से पैसा फैंकने का तर्क यह दिया जाता है कि उपभोगताओं की खरीद क्षमता बढेगी। भारत में कई प्रकार से धन का दुरूपयोग किया जाता है, जैसे की बेकार में कई वस्तुओं के लिऐ आर्थिक सहायता देकर राज्य के संसाधनों का पूरा उपयोग नहीं हो पाता। हालांकि यह आर्थिक सहायता गरीबों के नाम पर दी जाती है, किंतु वास्तव में यह पहले से धनी लोगों को ही मिलती है, अथवा सरकारी राजस्व का दुरूपयोग होता है।

प्रारंभ में हमने सुझाव दिया था कि सातवां वेतन आयोग लागू न किया जाऐ, इसके बाद हमने यह भी सुझाव दिया कि अगले 10 वर्ष तक सरकारी कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि पर रोक लगानी चाहिऐ।

सातवें वेतन आयोग से लगभग 1 करोड़ सरकारी कर्मचारियों के लिऐ रू. 1 लाख करोड से अधिक का व्यय किया गया है। औसतन यह रू. 1 लाख प्रति कर्मचारी वार्षिक बनता है।

जब हम किसानों की औसत आय से इसकी तुलना करते हैं तो यह पाते हैं कि किसान की आय लगभग रू. 70,000 वार्षिक है अथवा 15 राज्यों में औतस आय केवल रू. 16,000 वार्षिक है, अतः सरकारी कर्मचारियों के वेतन में इतनी वशद्धि का कोई औचित्य नहीं है।

इसलिऐ हमारा दृढ़ विचार है कि सरकारी कर्मचारियों के वेतन में 25 प्रतिशत कटौती की जाऐ और उस बचत को देश के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र और शिक्षा कार्यक्रमों तथा अन्य उपयोगी सेवाओं में लगाया जाऐ। प्रश्न यह उठता है कि क्या भारत 1 करोड़ सरकारी कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि की जानी चाहिऐ, अथवा भारत के सभी नागरिकों को विश्व स्तर के स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा उपलब्ध करानी चाहिऐ।

किसानों की आय और सरकारी कर्मचारियों के वेतन में अत्यधिक अंतर होने के कारण ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में लोगों का पलायन होता है और इसी कारण जातिगत राजनीति, आरक्षण की मांग और समाज में विभाजन की समस्याऐं उत्पन्न होती हैं। इसी कारण से सरकारी नौकरियों की सबसे अधिक मांग है। हाल ही में एक विज्ञापन में बताया गया है कि देश में 1 लाख रेलवे पदों के लिऐ 2 करोड़ 80 लाख लोगों ने आवेदन किया। प्रत्येक पद के लिऐ 280 लोगों ने आवेदन दिया है। यह भी सच है कि उच्च पदों पर कार्यरत सरकारी अधिकारियों को कम वेतन मिलता है लेकिन मध्य स्तर और निचे के पदों पर कार्य करने वालों को बहुत अधिक वेतन दिया जाता है। इस प्रकार के कई ऐसे मुद्दे हैं जिन्हें राजनैतिक दलों के द्वारा अपने–अपने वर्ष 2019 के आम चुनाव के घोषणापत्रों में उठाना चाहिऐ।

– अजय वीर जाखड़
अध्यक्ष, भारत कृषक समाज
@ajayvirjakhar

o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o

'ड्रॉफ्ट पंजाब राज्य किसान नीति' पर हुऐ सम्मेलन का सार

डॉ० रमेश चंद, नीति आयोग और 15वें वित्त आयोग के सदस्य

पंजाब राज्य प्रत्येक व्यक्ति के दिल में एक विशेष अनुभूति उत्पन्न करता है; पंजाबियों के बारे में यह मशहुर है कि वे तंगहाली में भी बहुत कुछ कर सकते हैं; वे आशाऐं जगाते हैं और कभी निराश नहीं होते। लेकिन जब लोगों को पता चलता है कि आज पंजाब में क्या हो रहा है, तो उन्हें बहुत निराशा होती है क्योंकि वे पंजाब को अन्य राज्यों से अलग राज्य मानते हैं।

किन्तु यह सच है कि प्रत्येक प्रौद्योगिकी की कुछ समय सीमा होती है और उस निश्चित समय के बाद वह प्रौद्योगिकी व्यर्थ हो जाती है। पंजाब में हरित क्रांति के लिऐ अपनाई गई प्रौद्योगिकी के कारण आज पंजाब की ऐसी दयनीय स्थिति हो गई है।

हरित क्रांति से पंजाब के सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन में अत्यधिक सहायता मिली थी। 1960 के दशक में लोगों के जैसे मकान थे, आज उनके मकान बिलकुल अलग ढंग के आधुनिक

सुविधाओं से युक्त बने हुऐ हैं। 1980 के दशक में पंजाब की कृषि में कुछ कमियां देखने में आई और वर्ष 1985–86 में एक सरकारी समिति ने फसलों के विविधिकरण का मामला उठाया था। पंजाब में कृषि क्षेत्र के उभरते हुऐ संकट पर मैंने वर्ष 1999 में ईकॉनोमिक पॉलीटीकल विकली में एक लेख प्रस्तुत किया था जिसमें संभावित विकल्प सुझाऐ गऐ थे।

लोग पंजाब में उभरते हुऐ विरोधाभास के बारे में बात करते हैं; पंजाब में बाहर से लाखों लोग काम करने क्यों आते हैं, जबकि पंजाब का युवा बेरोजगार है। मैंने इसका उत्तर दिया। पंजाब में कई समितियां हैं किन्तु किसी ने कभी कोई कार्यवाही नहीं करी और राजनैतिक नेता चमत्कार की उम्मीद कर रहे हैं।

पंजाब ने बहुत लंबे समय तम कुछ कार्यवाही होने का इंतजार किया लेकिन कुछ नहीं हुआ और अब उम्मीद की जाती है कि पंजाब किसान नीति के कारण कुछ कार्यवाही अवश्य होगी। यदि अब कार्यवाही में विलंब हुआ तो पंजाब की हालत को सुधारना बहुत कठिन हो जाऐगा।

मसौदा दस्तावेज के 4 विभिन्न लक्ष्य हैं। पहला, किसानों को जीवनस्तर स्वीकार्य स्थिति तक सुधारा जाऐ, इसके लिऐ 2 उपाय हैं। पहला, पंजाब में ही किसान नेताओं और राजनैतिक नेताओं तथा विद्वानों के माध्यम से संभव है। दूसरा, पंजाब से बाहर जो कि बिलकुल अलग है।

पंजाब के बाहर का कोई भी किसान कहेगा कि यदि राज्य में सिंचाई और उच्च पैदावार, निश्चित मॉर्केट और सरकार फसलों की खरीद करती है तो इससे बड़ा सौभाग्यशाली किसान कौन होगा। पंजाब में यह सब सुविधाऐं हैं, किंतु वहां का किसान इसे अभिशाप समझता है न कि वरदान।

पंजाब के बाहर लोग महसूस करते हैं कि पंजाब के किसान की आय बहुत अधिक है; क्योंकि वहां की उत्पादकता और जुताई क्षेत्र के अनुकूल है। राजस्थान में भी जुताई क्षेत्र बहुत है लेकिन उत्पादकता आय बहुत कम है। पंजाब में केवल 0.5 प्रतिशत से कम किसान निर्धन हैं और इसके अतिरिक्त किसान की आय और गैर किसान व्यक्ति की आय में अंतर भी बहुत कम था।

हालांकि पिछले 4 – 5 वर्ष में भी किसान और गैर कृषि से प्राप्त होने वाली आय लगभग बराबर थी। लेकिन इन 4 – 5 वर्ष में कृषि क्षेत्र में विशेष उन्नति न होने के कारण गैर कृषि क्षेत्र की आय किसानों से 30 प्रतिशत से अधिक हो चुकी है।

पंजाब का किसान वहां की उपलब्ध विशेष सुविधाओं पर पछता रहा है; उसका मानना है कि न्यूनतम समर्थन मूल्य मिलने और खाद्य सुरक्षा के कारण उन्हें सुनहरे अवसरों से वंचित होना पडा है और वे ऋण के बोझ के तले दब चुके हैं। पंजाब में प्रति किसान और प्रति परिवार ऋण

बहुत अधिक है और किसान असंतुष्ट और शोषित महसूस करते हैं क्योंकि हर कोई चाहता है कि वह प्रगति करे। भारत से 4 गुणा अधिक प्रति व्यक्ति आय के देश वाले किसान भी और अधिक कमाना चाहते हैं। इसी प्रकार पंजाब राज्य के किसानों की आय अन्य राज्यों के किसानों से बहुत अधिक होने के बाद भी वे और अधिक कमाना चाहते हैं।

पंजाब के किसानों के जीवनस्तर में कैसे सुधार किया जा सकता है ? यह भी सच है कि जो एक व्यक्ति को स्वीकार्य होगा वह दूसरे को नहीं। विश्व में कई कृषि क्षेत्र ऐसे हैं जिनकी उत्पादकता पंजाब जैसी है लेकिन चीन की उत्पादकता पंजाब से अधिक है; फ्रांस के कुछ क्षेत्रों में गेहूं की उत्पादकता अधिक है; पंजाब में 1 हेक्टेयर भूमि पर 11 टन धान और गेहूं की फसल उगाई जाती है।

भारत में किसी भी राज्य में ऐसा उत्पादकता वाला क्षेत्र नहीं है। पंजाब के बाहर यदि गेहूं और धान को छोडकर कुछ फल और सब्जियां उगाता है तो उसकी आय 5 गुणा बढ़ जाऐगी। किंतु पंजाब में यह केवल 1:2 के अनुपात में है। पंजाब में उच्च तकनीक की कृषि, विभिन्न मॉडल जैसे विकल्प अपनाने की आवश्यकता है किंतु ऐसा परिवर्तन लाना सरल नहीं है।

यह एक भ्रम है कि यदि बिजली की दरें बढाकर धान की उत्पादकता कम की जा सकती है तो यह सत्य है कि धान का बिजाई क्षेत्र कम नहीं होगा बल्कि पानी का उपयोग कम हो जाऐगा। लेकिन धान फस्ल चक्र से बाहर नहीं हो सकती, इसकी खेती होती रहेगी। इसलिऐ विभिन्न उपाय, संस्थागत ढांचा और भिन्न नियम और कानून बनाने की आवश्यकता है ताकि विकल्पों को प्रोत्साहित किया जा सके।

संक्षेप में यह है कि पंजाब के किसानों का जीवनस्तर सुधारने के लिऐ सीमित अवसर हैं, इसलिऐ पंजाब राज्य में कृषि समस्याओं के समाधान के लिऐ कृषि से अलग अन्य विकल्पों को ढूंढना ही होगा।

जब पंजाब में कृषि के अंश और कुल मजदूरों में कृषि मजदूरों की बात आती है तो कई विरोधात्मक संकेत सामने आते हैं। प्रति व्यक्ति आय की दर से कोई भी राज्य अथवा देश ऐसा नहीं है जिसकी अर्थव्यवस्था में 35 प्रतिशत कृषि क्षेत्र का योगदान है।

यदि कोई राज्य या देश पंजाब की प्रति व्यक्ति आय के स्तर पर पहुंचता है तो कृषि में उसका भाग 8 से 10 प्रतिशत ही होगा। यहां कृषि से बहुत आशाऐं हैं और इस कारण समस्या का समाधान ढूंढना बहुत आवश्यक है।

मुख्य राष्ट्रीय रूझानों से अलग भिन्नता यह है कि पंजाब की कुल अर्थव्यवस्था के भाग में कृषि का भाग 35 प्रतिशत होने के बावजूद भी यहां के केवल 31 प्रतिशत लोग कृषि में लगे हुऐ हैं।

देश भर के आंकडों से यह आंकडा अलग है जबकि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान 35 प्रतिशत और कृषि में रोजगार का भाग 65 प्रतिशत से अधिक है। इसका विरोधात्मक कारण यह है कि पंजाब में गैर कृषि क्षेत्र को नजरांदाज किया जा रहा है। पंजाब का किसान अपनी फसल के लिए अधिक मूल्य पाने के लिऐ विलाप कर सकता है लेकिन यह समस्या का स्थाई समाधान नहीं हो सकता।

दूसरा, लक्ष्य है प्राकृतिक संसाधनों का बेहतर ढंग से उपयोग किया जाऐ। पंजाब में पर्याप्त मात्रा में जल विद्यमान है और बडी मात्रा में मीठा पानी उपलब्ध है। लेकिन एक छिपी हुई समस्या यह है कि कुछ समय के बाद यहां पानी की कमी हो जाऐगी। यदि मुफ्त बिजली के बारे में कुछ नहीं किया गया तो यह समस्या गंभीर हो सकती है।

यदि पानी के मूल्यों और उपयोग के लिऐ कुछ नहीं किया गया तो पंजाब में भी पानी की एक स्थाई समस्या बन जाऐगी। धान की पैदावार बंद नहीं होगी लेकिन बिजली के मूल्यों को नियंत्रित किया जाना चाहिऐ ताकि किसान केवल धान के लिऐ 40 प्रतिशत बिजली का उपयोग करेंगे और पानी की भी बचत होगी, यही मेरे लेख में कहा गया है।

तिसरा लक्ष्य उस छिपी हुई या दिखाई देने वाली समस्या का समाधान करना है – पंजाब में बेरोजगारी की समस्या। पंजाब में दो प्रकार के युवा हैं : एक वह वर्ग जो बिना योग्यता के भी अधिक आय वाली नौकरी चाहते हैं और बढी संख्या में ऐसे युवा हैं जो योग्य हैं किंतु उन्हें नौकरी नहीं मिल रही है।

ग्रेजुएट युवा भी नौकरी नहीं ले पा रहे हैं। अन्य राज्यों की तुलना में पंजाब में कुल कृषि कामगारों में से बाहर से आने वाले कामगारों का अनुपात सबसे अधिक है। पंजाब में कृषि रोजगार के कई अवसर हैं किंतु यहां के लोग नहीं करना चाहते।

इसका समाधान यह है कि कृषि क्षेत्र को इस प्रकार से बनाया जाऐ की वह युवाओं के हित और सोच के अनुसार लाभकारी बन सके। पंजाब में प्रत्येक किसान परिवार अपने बच्चों को खेती करने की सलाह नहीं देता। यह कभी लाभकारी क्षेत्र था किंतु अब अधिकतम लोग खेती नहीं करना चाहते क्योंकि यह स्पष्ट है कि कृषि क्षेत्र में अधिक आय प्राप्त नहीं हो सकती।

पंजाब के युवाओं को मशीनों पर काम करना जैसे ट्रैक्टर चलाना और अन्य मशीनों पर कार्य करना ज्यादा पसंद है। इसके लिऐ ऐसा समाधान ढूंढना होगा जहां लोगों को मशीनों पर काम करना पडे ताकि उनके हाथ मैले न हों और उन्हें कौशल पूर्ण कार्य उपलब्ध कराने होंगे जिनसे वे अधिक आय अर्जित कर सकें।

1980 के दशक में मध्य में पंजाब में आतंकवाद के समय कृषि क्षेत्र और उद्योग क्षेत्र दोनों में ही तेजी से कमी आई। वर्ष 1991 के बाद आर्थिक सुधारों के बाद बहुत से राज्यों ने उभरते हुऐ अवसरों का लाभ उठाया। उदाहरण के लिए पुणे, बैंगलोर और मैसूर ने सूचना प्रौद्योगिकी के केन्द्र खोल लिऐ जबकि मोहाली जैसे क्षेत्र ने इस अवसर का गंवा दिया। पंजाब राज्य में सेवा क्षेत्रों का भी लाभ नहीं उठाया गया। सबसे बडी त्रासदी यह है कि पंजाब में कृषि क्षेत्र में कई अवसर हैं किंतु इनका लाभ उठाने के लिऐ कोई ठोस कदम नहीं उठाऐ जा रहे हैं।

उर्वरक और ट्रैक्टरों की आवश्यकता की पूर्ति के लिऐ यहां उद्योग लगाने की संभावनाऐं हैं। ऐसा करने पर यहां के लोगों को रोजगार भी मिलेगा और वे कृषि कार्यों से अलग क्षेत्र में काम करके अपनी आय बढ़ा सकते हैं। यह सच है कि खुली अर्थव्यवस्था के दौर में जब तक पंजाब में निवेश करना लाभकारी सिद्ध नहीं होगा तब तक राज्य से बाहर ट्रैक्टर और उर्वरक तैयार होते रहेंगे। कृषि पर अत्यधिक निर्भरता के कारण पंजाब राज्य ने कृषि क्षेत्र के अतिरिक्त अन्य उद्योग क्षेत्रों के अवसर गंवा दिऐ हैं।

चौथा लक्ष्य उन्नत शासन और डिलिवरी का है जो पंजाब की स्थिति सुधारने में उपयोगी सिद्ध हो सकता है। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण लक्ष्य है, इन सुविधाओं के उपलब्ध न होने से अन्य तीन लक्ष्य प्राप्त नहीं किऐ जा सकते।

कोई भी व्यक्ति केन्द्र सरकार को दोष दे सकता है कि उसकी गलत नीतियों के कारण पंजाब की आज यह स्थिति है। किंतु यह मानना चाहिऐ की किसी भी सरकार या नीति निर्माण करने वालों की मंशा किसी राज्य को हानि पहुंचाने की नहीं हो सकती। इसके लिऐ केन्द्र और राज्य सरकार दोनों को मिलकर कार्य करने होंगे।

नेताओं को कुछ साहसिक निर्णय लेने की आवश्यकता है। पानी को छोडकर, पंजाब में प्राकृतिक संसाधनों की भरमार है। कुछ लोग कहते हैं कि पंजाब की भूमि यूरिया के प्रयोग के कारण खराब हो रही है।

लेकिन मैंने पंजाब में कोई भी खेत ऐसा नहीं देखा जो यूरिया के उपयोग के कारण खराब हुआ हो। पंजाब की भूमि आज भी उतनी ही उपजाऊ है जितनी हरित कांति के समय थी, इसे और अधिक उपजाऊ बनाने के लिऐ कुछ माइक्रो–न्यूट्रिऐन्टस का उपयोग किया जा सकता है। किंतु एक समस्या पानी की अवश्य है उसका भी समाधान प्रौद्योगिकी अपनाकर किया जा सकता है।

o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o-o